B.A Part II Paper III

16/05/2020

Indian Logic

Dr. Anita Kumari
J.K. College Biraul.

Vyapti

(व्याप्ति) व्याप्ति अनुमान का सबसे प्रमुख कारण है। लिङ्ग - लिङ्गी के साहचर्य संबंध का नाम ही व्याप्ति है। यह संबंध प्रत्यक्ष ज्ञान से ही उद्भूत होता है। व्याप्ति ज्ञान के साथ साथ व्याप्ति-स्मरण भी नव्य नैयायिकों द्वारा अनुमान का कारण माना जाता है।

नव्यन्याय के अनुसार अनुमान का मूल आधार व्याप्तिज्ञान है। इसीलिए नवीन न्याय के ग्रंथों में 'व्याप्तिबलेन अर्थगमकं लिङ्गम्' तथा लिङ्ग 'परामर्शोऽनुमानम्' अर्थात व्याप्ति के बल से अर्थ की प्रीति कराने वाले को लिङ्ग तथा लिङ्ग के परामर्श को अनुमान कहते हैं, यह अनुमान की परिभाषा प्रतिष्ठित हुई। साक्षात् रूप से यद्यपि लिङ्ग ही अनुमान का आधार है परन्तु व्याप्ति के द्वारा जब तक यह प्रमाणित होकर नहीं आता तब तक वह मान्य नहीं है। धूम को हम अग्नि का लिङ्ग मानते हैं, हम नियत रूप से अग्नि और धूम को साथ-साथ प्रत्यक्ष करके ज्ञान लेते हैं कि जहाँ धुँआ रहता है वहाँ आग रहती है। दोनों के इसी साहचर्य नियम का नाम व्याप्ति है। इसी व्याप्ति के बल पर खड़े हुए लिङ्ग का तीसरा ज्ञान लिङ्ग-परामर्श कहलाता है और यही अनुमान है।

लिङ्ग-परामर्श :- जहाँ लिङ्ग और लिङ्गी दोनों विद्यमान रहती हैं, वहाँ अनुमान होता है। वह रसोईघर जहाँ कि हमने लिङ्ग और लिङ्गी के साहचर्य नियम को सीखा है (

अनुमान का विषय नहीं अपितु प्रत्यक्ष का विषय है। ध्यान

9 Tue

में रखने की पहली बात यह है कि अनुमान नहीं होता है जहाँ केवल लिङ्ग का प्रत्यक्ष होता है लिङ्गी का नहीं। यदि दूरस्थ पर्वत पर हम धुँआ उठता देखते हैं तो वह हमारे अनुमान का विषय बनता है। वहाँ हमें धुआं प्रत्यक्ष दिखाई देता है, आग नहीं। हम धुएं को देखकर आग का अनुमान करते हैं, पर कैसे? इसकी भी एक प्रक्रिया है। धुआं को देखते ही हमें यह व्याप्ति याद आई कि जहाँ धुआं होता है वहाँ आग होती है। यह पहाड़ पर धुआं उठता दिखाई दे रहा है। अतः यहाँ भी आग है। यह अनुमान है। यही लिङ्ग परामर्श है। कुछ नैयायिकों ने अनुमान का लक्षण 'अनुमितिकरणम् अनुमानम्' किया

10 Wed

है। बात यहाँ यह है कि अनुमान प्रमाण से अर्जित ज्ञान को 'अनुमिति' कहते हैं। उसका कारण अर्थात् उत्कृष्टतम साधन लिङ्ग परामर्श ही माना गया है, इसलिए अनुमान के इस लक्षण में भी लिङ्ग परामर्श ही अनुमान ठहरता है।

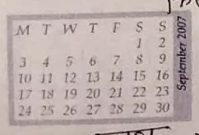

अन्वयव्यतिरेक :- अन्वयी का अर्थ भावानुसारी तथा व्यतिरेकी का भाव अभावानुसारी है। यदि किसी वस्तु के रहते हुए उसके चिन्ह या लिङ्ग का भी रहना वर्णन किया जाता है तो उसे अन्वय संबंध कहते हैं। उसके आधार पर गढ़ी हुई व्याप्ति अन्वय-व्याप्ति कही जायेगी।

M	T	W	T	F	S	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

September 2007

व्याप्य और व्यापक अर्थात् साध्य और साधन

11 Thu

(लिङ्गी और लिङ्ग) दोनों जहाँ भाव रूप से वर्णन किए जाएं वहाँ पर अन्वय व्याप्ति होती है जैसे 'यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र वह्निः' जहाँ-जहाँ धुआँ होता है वहाँ-वहाँ आग भी होती है, यह अन्वय व्याप्ति है। इसके बल पर खड़ा हुआ हेतु अन्वयी हेतु कहलायेगा क्योंकि उसका आधार अन्वय व्याप्ति है। व्यतिरेक व्याप्ति अभावप्रधान होती है। अन्वय-व्याप्ति में 'साधन की सत्ता से साध्य की सत्ता' बताई जाती है परन्तु व्यतिरेक व्याप्ति के अन्तर्गत साध्य के अभाव से साधन के अभाव का निर्देश किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि पूर्वोक्त अन्वय व्याप्ति को हम व्यतिरेक व्याप्ति के रूप में परिणत करना चाहें तो कहा जाएगा 'जहाँ

12 Fri

आग नहीं वहां धुआं नहीं'। इस प्रकार अन्वय व्याप्ति के अन्तर्गत साध्य/साधनवाची शब्दों को उल्टे क्रम में रखकर उनके साथ 'अभाव' पद लगा देने से व्यतिरेकव्याप्ति बन जाती है। उपर्युक्त उदाहरण में 'धूमवत्व' हेतु के उभयमुखी व्याप्ति पर आश्रित होने के कारण दोनों ही व्याप्तियां बन जाती हैं, इसलिए 'धूमत्व' अन्वय व्यतिरेकी हेतु है।

केवलान्वयी - परन्तु प्रत्येक अन्वय व्याप्ति से उल्टा करके अभाव रूप से वर्णन कर देने से व्यतिरेकव्याप्ति नहीं बनती। व्याप्ति बनाने से पहले भी विचार करना पड़ता है कि साध्य साधन का साहचर्य

नियम टूटा तो नहीं। यदि टूटता है तो व्याप्ति नहीं

13 Sat बनेगी।

व्याप्ति की कसौटी दृष्टांत है। जैसी भी व्याप्ति हम बनाते हैं उसके उसके अनुरूप यदि हमें दृष्टांत नहीं मिलता तो व्याप्ति असिद्ध ही रहती है।

14

Scanned by CamScanner